साझी संस्कृति की विरासत : कितने पाकिस्तान

जयंती सिंह
शोधार्थी, विश्वभारती, शांतिनिकेतन
पश्चिम बंगाल

शोध सार
प्रस्तुत शोध आलेख में 'संस्कृति' शब्द की अवधारणा को परिभाषित किया गया है। कमलेश्वर का 'कितने पाकिस्तान' विमर्शमूलक उपन्यास है जिमसें कथाकार ने भारतीय साँझी संस्कृति के उन मूल तत्वों की तलाश की है जो उनकी विश्वव्यापी मानवीय सौहार्द्रपूर्ण दृष्टि को व्याख्यायित करता है।

बीज शब्द
संस्कृति, सामासिक, आतंकवाद, अलगाववाद, मजहबी, वतनपरस्ती, सांप्रदायिकता

संस्कृति एक ऐसा पर्यावरण है जिसमें रहकर व्यक्ति एक ऐसा सामाजिक परिवेश बनाता है जिसमें प्राकृतिक पर्यावरण को अपने अनुकूल बनाने की क्षमता अर्जित करता है। साधारण तौर पर संस्कृति सीखे हुए व्यवहारों की संपूर्णता है। संस्कृति की अवधारणा इतनी विस्तृत है कि उसे एक वाक्य में परिभाषित नहीं किया जा सकता है। डॉ. शिवदास ने संस्कृति की परिभाषा देते हुए लिखा है, "संस्कृति मानव अथवा मानव समुदाय की मानसिक बौद्धिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों की अभिवृद्धि और परिष्करण की सूचक होती है। संस्कृति का मूल मात्र भौतिक समृद्धि से नहीं जाँचा जा सकता।"[1] संस्कृति सदियों से समय के प्रवाह में बहते हुए परिमार्जित और परिष्कृत होती रहती है। संस्कृति को विकसित करने में किसी एक विशेष जाति का योगदान नहीं होता क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समूह में रहना पसंद करता है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भारतीय संस्कृति पर विचार करते हुए लिखा है, "मैं संस्कृति को किसी देश-विशेष या जाति-विशेष की अपनी मौलिकता नहीं मानता। मेरे विचार से सारे संसार के मनुष्यों की एक सामान्य मानव-संस्कृति हो सकती है। यह दूसरी बात है कि वह व्यापक संस्कृति अब तक सारे संसार में अनुभूत और अंगीकृत नहीं हो सकी है। नाना परिस्थितियों में रह कर संसार के भिन्न-भिन्न समुदायों ने उस महान मानवी संस्कृति के भिन्न-भिन्न पहलुओं का साक्षात्कार किया है।"[2] अत: संस्कृति किसी की जातीय विरासत नहीं होती बल्कि वह युगों-युगों से चली आई होती धारा में अनेक नए तथ्यों से जुड़कर एवं घुल-मिलकर एक हो जाने की प्रकिया है। भारतीय संस्कृति विश्व बंधुत्व की संस्कृति है, वसुधैव कुटुम्बकम् की है। हमारी नीति समभाव की है, सामूहिक रहन-सहन की, सामूहिक कर्म करने की मिलजूल कर रहने की, मानवता की, परहिताय की, भारतीय संस्कृति की विशेषता का मूल्यांकन करते हुए डॉ. ज्योति वत्स ने लिखा है, "हमारी संस्कृति सदैव से ही सामासिक रही है। देश के पूर्वी कोने से लेकर दक्षिण कोने तक क्षेत्रीय विविधता होते हुए भी लोगों की मानसिकता एक है, संस्कृति एक है। भारत की संस्कृति पर आर्यों की गहरी छाप है। हमारी संस्कृति में समन्वय की अद्‌भुत ताकत है। इतनी बाह्य संस्कृतियों का आगमन होने पर भी यह संस्कृति सदैव जीवित रही है। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक भारत एक है। भारतीय संस्कृति उदार और सहिष्णु है। हमारी संस्कृति का अनेक संस्कृतियों से मेल इसी ओर संकेत करता है।"[3]

कमलेश्वर का 'कितने पाकिस्तान' एक विमर्शमूलक उपन्यास है जिसमें लेखक ने समय को नायक बनाकर दुनियाभर में पनपने वाले आतंकवाद के कारणों का विवेचन किया है तथा इसके परिपेक्ष्य में भारत की संस्कृति की साँझी विरासत को भी प्रस्तुत किया है जो हर समय अपने अक्षुण्य रूप में रही जिसे मनुष्य ने अपने स्वार्थ के लिए नष्ट-भ्रष्ट करना चाहा। लेखक ने इस उपन्यास में हिंदुस्तान की गंगा-जमुना संस्कृति के मानवीय उदार पक्ष को प्रस्तुत किया है। उनका मानना है कि संस्कृति स्वयं में अक्षुण्य है। वे लिखते हैं, "कोई भी संस्कृति पाकिस्तानों के निर्माण के लिए जगह नहीं देती। संस्कृति अनुदार नहीं, उदार होती है --वह मरण की उत्सव नहीं मनाती, वह जीवन के उत्सव की अनवरत श्रृंखला है। इसी सामासिक संस्कृति की जरूरत हमें है क्योंकि वह जीवन का सम्मान करती है।"[4] कमलेश्वर ने इस विराट कथानक फलक पर अनेक स्थानों पर भारत की सामासिक संस्कृति के शुभ पक्ष को दिखाकर जीवन के प्रति अपने सकारात्मक नजरिए को रखा है तथा उन तथ्यों का पुरजोर विरोध किया है जो हिंदुस्तान की साँझी विरासत को खतरा पहुँचाते हैं। उपन्यास में अदीब जब मीरबाकी के गांव सनेहुआ जाता है

तब फैजाबाद के सड़कों पर वह जो चहल-पहल देखता है, उस भीड़ में हिंदू-मुस्लिम की मिली-जुली सांस्कृतिक परिदृश्य देखने को मिलती है, "मुसलमान औरतें बुरका पहने बाजारों में खरीद-फरोख्त कर रही थीं या चूड़ियाँ पहन रही थीं। हिंदू मनिहार उनकी नाजुक कलाइयों में चूड़ियाँ पहना रहे थे और वे बुर्के का पल्ला उठाए, खुले मुँह उनके सामने बैठी थीं। ये मनिहार उनके भाई, चाचा, या मामा थे।"[5]

हिंदू-मुसलमान की ये साँझी सामान्य जनजीवन को जीवन के मुख्यधारा से अलगाया नहीं जा सकता। विभाजन के उपरांत सलमा के नाना पाकिस्तान में मुहाजिर के रूप में रहने लगे परंतु अपने दिलों-दिमाग से अपने वतन हिंदुस्तान की यादों को नहीं भूला सके, सलमा कहती है, "अदीब! तुम मुसलमान की इस रूहानी तकलीफ को नहीं समझ सकते। अगर तुम हिंदू हिंदुस्तान के कदीमी बाशिंदे हो, तो हम भी यहीं की कदीमी औलादें हैं ...हम मुसलमान हो गए तो क्या हुआ ...मजहब बदलने से मिट्टी तो नहीं बदल जाती।"[6] अलगावावादी राजनीति ने ऐसा वातावरण बनाया जिसमें हिंदू आवश्यकता से अधिक हिंदू और मुसलमान आवश्यकता से अधिक मुसलमान बन गए। इतिहास खँगालने पर देखा जाता है कि अकबर और दाराशिकोह ने हिंदू-मुस्लिम की मिली-जुली संस्कृति का निर्माण करने का प्रयास किया। परंतु औरंगजेब ने अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए पनपती हुई एक विश्व-व्यापी संस्कृति को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। शहंशाह जहाँगीर उगते और डूबते सूरज को सलाम करता है। उसके अनुसार सूरज की इबादत करने का रस्म अकबर ने जोधाबाई से पाई थी। जहाँगीर कहता है, "उगते सूरज को सलाम करना और डूबते सूरज को नमाज के साथ विदा करना ...यह तो हमारी हिंदुस्तानी परंपरा का खास हिस्सा है।"[7] प्रकृति के साथ इन्सान के नैसर्गिक संबंध को विद्या भी महसूस करती है। जब दंगे के बीच सबकुछ लुटाकर एक अनजाने शहर पहुँचती है और पाकिस्तान पहुँचकर उसे हैरानी के साथ राहत होती है कि यहाँ भी लोगों को बारिश की फिक्र है, "हिंदुस्तान के किसान का धर्म कुछ भी हो, उसके मौसम एक हैं। बैसाख चल रहा था और मेवात में यह शादियों का मुकद्दस मौसम था।"[8] हिंदुस्तान का किसान का धर्म मिट्टी से गहरे रूप में जुड़ा हुआ है जिसे मजहब की दीवारें अलग नहीं कर सकतीं। हिंदुस्तान के लोकमानस में साधारण रीति-रिवाज पूरी तरह से भारतीय है जिसे किसी भी रूप में नहीं अलगाया जा सकता। आज भी मुसलमान बहन शादी के समय 'रघुवीर भैया' से भात लाने का आग्रह करती हैं। 'रघुवीर' शब्द साँझी संस्कृति का उदाहरण है। काफिर होने का सूचक नहीं। सलमा इस्लाम के संकीर्ण रूप का विरोध करते हुए कहती है, "इस्लाम जैसा मजहब किसी मुल्क की सरहदों में कैद कैसे किया जा सकता है।"[9] और शायद इसलिए इस्लाम की सबसे बड़ी विशेषता है कि उसका उद्भव भले ही अरब मुल्क में हुआ हो किंतु वह धरती के जिस-जिस हिस्से में फैला वहाँ की तहजीब को अपने भीतर जज्ब करता गया। इसी कारण कश्मीरी मुसलमान और ईरानी मुसलमान मजहबी रूप से एक होते हुए भी अपनी संस्कृति में अलग-अलग ढंग से ढले हुए हैं। लल्लेश्वरी और हब्बा खतून को कश्मीर में नहीं बाँटा जा सकता क्योंकि इनके द्वारा रचा गया साहित्य भारत की मिली-जुली तहजीब का महत्वपूर्ण हिस्सा है। लेखक का मानना है कि संस्कृति गत्यात्मक होती है और सतत परिवर्तनशील होने के कारण सनातन भी। भारतीय इतिहास में अकबर के बाद दाराशिकोह ने इस साँझी विरासत में एक नया अध्याय जोड़ने की कोशिश तो की थी किंतु औरंगजेब की स्वार्थांधता की तलवार ने इसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए और भारतीय तहजीब की सरहदों पर सांप्रदायिकता की दीवारें गढ़ दीं। दाराशिकोह के सिर कलम होने के साथ ही हिंदुस्तान की बनती हुई तहजीब का भी सिर अपने धड़ से जुदा हो गया, "इस मुल्क की मिट्टी में वह ताकत और तासीर है कि यह सबको जज्ब कर लेती है।"[10] आज नफरत की घटाएँ चारों ओर उमड़ रही हैं। भारत आतंकवाद, जातिवाद एवं अलगाववाद जैसे समस्याओं से लगातार जूझ रहा है। ऐसे में कमलेश्वर की यह विश्वव्यापी रचना एक नई रोशनी देती है। इस तथ्य को स्पष्ट करते हुए डॉ. दयाशंकर ने लिखा है, "यदि भारत के इतिहास पर नजर डालें तो पाकिस्तान (इस्लामपरस्ती) मानसिकता के तुरानी खलीफा, सिर हिंद में मुल्ला मौलवी, शिबली नोमानी, शाही काजी, अब्दुल अजीज, शाहजहां और औरंगजेब हैं तो उनकी मानसिकता को नकारने वाले अकबर, जहाँगीर, दाराशिकोह अनेक सूफी आदि उन्हीं के आगे या समय में मौजूद हैं जो इन्सान और वतनपरस्ती, साझेवादी और भाईचारे को सबसे बड़ी दौलत समझते हैं।"[11] उपन्यास का अंधा कबीर पोखरन में बोधिवृक्ष को रोपना चाहता है ताकि एक नई मानवीय संस्कृति की जड़ें वहाँ के सारे विष को सोख ले और दिन-प्रतिदिन देशों के बीच बढ़ते हुए खूनी संघर्ष विराम पा सके। कमलेश्वर की यह विश्वव्यापी सोच ही इस रचना को कालजयी बनाती है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. शिवदास, भारतीय संस्कृति के मूल तत्व, शारदा प्रकाशन, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, संस्करण : 1993, पृष्ठ संख्या - 19
2. द्विवेदी, डॉ. मुकुंद, हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली, खंड-9, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली -110002, संस्करण : 2007, पृष्ठ संख्या-199-200
3. वत्स, डॉ. ज्योति, हिंदी उपन्यास : सांस्कृतिक परिदृश्य, कल्पना प्रकाशन, जहाँगीरपुरी, संस्करण : 2012, पृष्ठ संख्या - 13
4. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली -110006, संस्करण : 2015, पृष्ठ संख्या - 182
5. वही, पृष्ठ संख्या - 79
6. वही, पृष्ठ संख्या - 102-103
7. वही, पृष्ठ संख्या - 142
8. वही, पृष्ठ संख्या - 328
9. वही, पृष्ठ संख्या - 110
10. वही, पृष्ठ संख्या – 223
11. संपादक--पटेल, डॉ. एम.बी. एंव मेहरा, डॉ. दिलीप, साठोत्तरी हिंदी उपन्यास, ज्ञान प्रकाशन, कानपुर--208011, संस्करण : 2009, पृष्ठ संख्या – 14